सिनेमाहौल

फ़िल्म ईज़ीन

संकलन और संपादन

अजय ब्रह्मात्मज

अप्रैल'24, अंक 6

गीताश्री
सृष्टि उपाध्याय
विवेक रंजन सिंह
उर्वशी संध्या वर्मा
अवशेष चौहान
अपूर्व बनर्जी
भवतोष पांडेय
डॉ. रक्षा गीता
भवेश दिलशाद
उदय कुमार मिश्र
संतोष बादल
डॉ. प्रकाश हिंदुस्तानी
मधुर भंडारकर
अंजू शर्मा
जवरीमल्ल पारख
इक़बाल रिज़वी
विजय राही
पराग मांदले
अणु शक्ति सिंह
संजीव चंदन
अमृता शीरीं
भूपेन्द्र सिंह
मिहिर पंड्या
यूनुस ख़ान
मनीष आज़ाद
राजीव सक्सेना
फ़रीद ख़ाँ
जे सुशील
सौम्या अपराजिता
देव आनंद

चमकीला

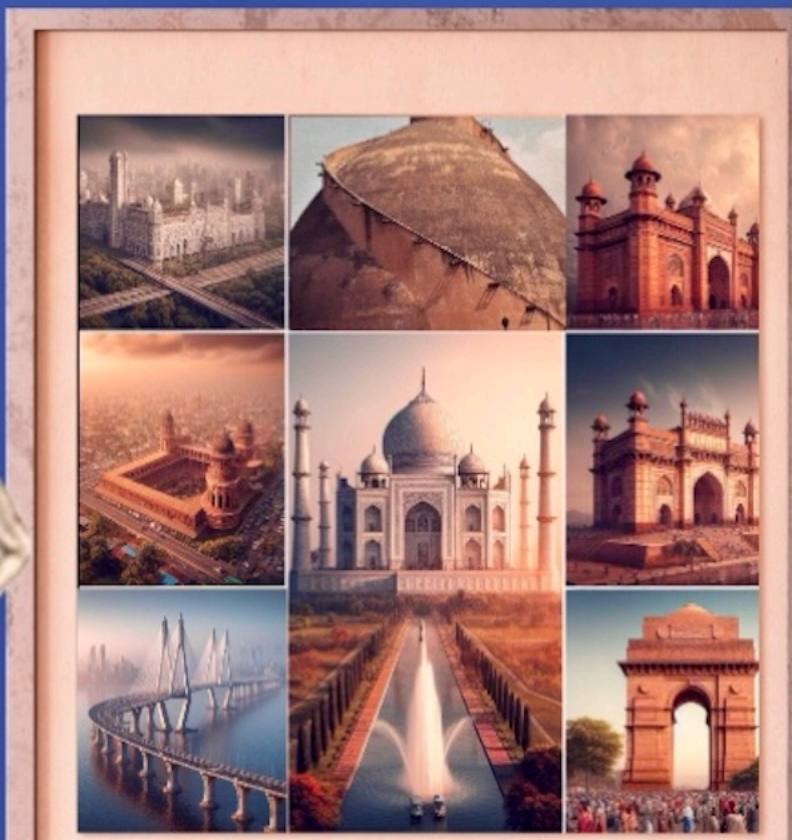

शहर और सिनेमा

अप्रैल, 2024

अंक 6

सिनेमाहौल

फ़िल्म ईज़ीन

संकलन और संपादन:

अजय ब्रह्मात्मज

अनुक्रम

मेरी बात 6

शहर और सिनेमा

ई हय बंबईयां नगरियाँ तू देख बबुआ 9

गीताश्री

मुंबई : शहर और सिनेमा 18

सृष्टि उपाध्याय

बनारस घाट, गली और चौराहे पर 'लाइट, कैमरा, एक्शन' की आवाज़ 23

विवेक रंजन सिंह

राजस्थान और हिंदी सिनेमा 34

उर्वशी संध्या वर्मा

ख्यात कथाशिल्पी कमलेश्वर, शहर मैनपुरी और क्लासिक फ़िल्म 'बदनाम बस्ती' 42

अवशेष चौहान

सिनेमा में शहर 51

अपूर्वा बनर्जी

समय के साथ बदलता सिनेमा और शहर का सम्बन्ध 58

भवतोष पाण्डेय

हासिल और इलाहाबाद 63

विवेक रंजन सिंह

मुंबई शहर में 'पिया का घर' 68

डॉ. रक्षा गीता

दास्तान मुंबई के सबसे पुराने सिनेमाघरों की 75

यूनुस ख़ान

फ़िल्मी गीतों में शहरों के नाम 92

इक़बाल रिज़वी

छोटे शहरों का सिनेमाई नैरेटिव 96

भवेश दिलशाद

दिल्ली 6 103

मिहिर पंड्या

स्मरण

मनोहर महाजन 115

उदय कुमार मिश्र

मैथिली फिल्म

राजा सलहेस 119

संतोष बादल

गान ज्ञान 123

डॉ. प्रकाश हिन्दुस्तानी

दिग्गज दृष्टि

हमारी फिल्मों की सीमाएं 130

देव आनंद

क्लासिक फिल्म

गर्म हवा 135

अजय ब्रह्मात्मज

विस्तृत बातचीत

मधुर भंडारकर 149

चमकीला विशेष

चमकीला 161

अंजू शर्मा

चमकीला पर एक बार फिर 165

जवरीमल्ल पारख

सतही और घिसी-पिटी 167

दिनेश श्रीनेत

'चमकीला' की चमक बाज़ार की चमक है… 171

मनीष आजाद

'चमकीला' के बहाने 175

विजय राही

चमकीला विमर्श 179

पराग मांदले

चमकीला की दलित पहचान 181

अणु शक्ति सिंह

बिलकुल अश्लील नहीं हैं चमकीला 184

संजीव चंदन

सभ्य समाज का मुखौटा उतार देता है चमकीला 188

गीताश्री

चमकीला के बहाने स्त्री पक्ष पर एक नज़र 197

अमृता शीरीं

पब्लिक अश्लीलता पसंद करती है 201

भूपेंद्र सिंह

बड़ी तारीफ हो रही है फ़िल्म की... 204

राजीव सक्सेना

चमकीला 208

फ़रीद ख़ाँ

चमकीला को यहां से देखें 210

जे सुशील

दादा साहेब फाल्के सम्मान

बोम्मिरेड्डी नरसिम्हा रेड्डी (1974) 216

सौम्या अपराजिता

मेरी बात

देखते देखते छठा अंक आ गया। प्रकाशक नीलाभ और गरिमा के सहयोग और सिनेमाहौल के 6 अंकों में शामिल लेखकों के योगदान से यह संभव हुआ। सीखने और समझने का सफ़र रहा। उम्मीद करता हूं कि अगले 6 अंकों में और लेखक सिनेमाहौल से जुड़ जाएंगे। फिल्मों पर लिखने वालों की जमात बढ़े।

सोचा तो यही था और अभी तक इसमें कोई खास बदलाव नहीं है कि फिल्मों पर हिंदी में लिख रहे सभी लेखकों को जोड़ा जाए। समय-समय पर फिल्मों, फिल्मी हस्तियों और प्रवृत्तियों पर व्यक्त उनके विचारों को एक जगह समेटा जाए। सोशल मीडिया के अपडेट और टिप्पणियों के रूप में आया विचार एक समय के बाद बिखर और लुप्त हो जाता है। पत्रिका की सामग्रियों की गुणवत्ता पर ध्यान देने से अधिक जरूरी मुझे लगता है कि फिल्म संबंधी सामग्रियां एकत्रित होकर मौजूद रहें। उन्हें कभी भी पढ़ा जा सके। अधिक से अधिक व्यक्ति लिखें और सिनेमा का अध्ययन-विश्लेषण विस्तृत और बहुआयामी हो।

घोषणा के मुताबिक इस बार का आवरण विषय 'सिनेमा और शहर' है। निजी व्यस्तता और स्वास्थ्य संबंधी अड़चनों की वजह से योजना के मुताबिक लेख नहीं जुटा सका। कुछ लेखकों ने मेरे आग्रह पर ध्यान नहीं दिया और कुछ से मैं संपर्क नहीं कर सका। फिर भी 'सिनेमा और शहर' विषय के कुछ पहलुओं और फिल्मों

पर लेख मिले। अच्छा अनुभव रहा। जिन लेखकों ने इस अंक के लिए लेख भेजे, उन सभी को हार्दिक धन्यवाद। आवरण विषय विशद है। इस पर फिर कभी एक और अंक लेकर आऊंगा। फिलहाल इस अंक में सम्मिलित लेखों पर अपनी राय दें।

इस महीने इम्तियाज अली की 'चमकीला' स्ट्रीम हुई है। स्ट्रीम होने के साथ हिंदी समाज में इसकी चर्चा और गहमागहमी बनी हुई है। पिछले साल 'एनिमल' की तरह 'चमकीला' की भी खूब चर्चा हो रही है। हालांकि दोनों के संदर्भ अलग हैं, लेकिन किसी फिल्म की इतनी चर्चा होना महत्वपूर्ण है। चमकीला संबंधित चर्चा को मैं सकारात्मक मानता हूं। इम्तियाज अली की इस फिल्म ने चमकीला के बहाने अनेक मुद्दों को बहस में ला दिया है। पक्ष-विपक्ष की समीक्षाएं और अपेक्षाएं जारी हैं। इस फिल्म को लेकर हिंदी समाज और हिंदी में लिख रहे लेखक उद्वेलित हैं। याद करें इस फिल्म के पहले कब किसी और फिल्म को लेकर बहसें हुई थीं?

मैं इसे इम्तियाज अली की बेहतरीन फिल्मों में से एक मानता हूं। 4-5 दशक पहले पंजाबी समाज में पॉपुलर इस गायक के जीवनांश को पर्दे पर पेश करते हुए इम्तियाज अली ने सफल शिल्पगत प्रयोग किए हैं। इस फिल्म के पाठ बढ़ेंगे।

इस अंक के संबंध में आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी। साथ ही आग्रह रहेगा कि आप आगामी आवरण विषयों के भी सुझाव दें।

इस अंक में 31 लेखकों का योगदान है। सभी को धन्यवाद!

नॉटनल पर पिछले 5 अंकों को कुल 12714 वी मिले हैं। है न प्रोत्साहित करने लायक आंकड़ा?

फिल्में देखें और फिल्में पढ़ें।

अजय ब्रह्मात्मज

अप्रैल 2024

cinemahaul@gmail.com

ई हय बंबईयां नगरियाँ तू देख बबुआ

गीताश्री

इस एक गाने में आप एक शहर जिसका नाम बंबई था, अब मुंबई, उसे देख सकते हैं। यह गाना नहीं, शहर का आईना है। जिसमें उसकी पूरी काया झांकती है। जब यह गाना पहली बार सुना था तब से बंबई पहुँचने तक बंबई स्वप्न सरीखा थी मेरे लिए। किशोर उम्र लड़की जो सिनेमा से ही अपनी रूमानियत गढ़ रही थी। सिनेमा ही वो संसार था जहां वह खुद को खो कर पाना चाहती थी। वह जल्दी बड़ी होना चाहती थी ताकि सपनीले शहर को देख सके। कोई हो जो उसे वह नगरी दिखा लाए जिसे वह हर दूसरी फ़िल्म में देखती आ रही है। उस शहर की माया में वह लपटाती रही। मन ही मन छटपटाती रही। कोई ईश्वर उसकी प्रार्थना नहीं सुन रहा था। परिवार से कहें तो कैसे? उन दिनों हर छुट्टी में गाँव जाना अनिवार्य होता था। गाँव ही कश्मीर और वही बंबई। मन ही मन सोचती कि बंबई भाग जाए। उन दिनों बहुत खबरें आती थी लड़के- लड़कियों के बंबई भागने की। बाबूजी दारोग़ा थे, थाना कैंपस में ही सरकारी क्वार्टर था।वहाँ से थाने का सारा नजारा दिखता था, सुनाई देता था। जिन दिनों दिल में बंबई भाग जाने का ख़्याल आता, उन्हीं दिनों ऐसी खबरें आतीं। उस क़स्बे में लड़कियों के भागने की घटनाएँ बढ़ रही थीं। कुछ तो

हीरोइन बनने का ख़्वाब लेकर भागती थीं। कुछ को लड़के भगा कर ले जाते। कुछ प्रेमी -प्रेमिका भी थे जो घर से भाग कर शादी कर लेते थे, उनमें से कुछ पकड़े जाते, कुछ ग़ायब हो जाते। उनके बारे में बुरी -बुरी खबरें आतीं। कुछ डर तो फ़िल्मों ने ही पैदा किया ये दृश्य दिखा कर कि प्रेमी के संग गहनों की पोटली लेकर भागी लड़की को कोठे पर बेच दिया और लड़का चंपत। हमारे क़स्बे में भी ऐसी बातें सुनाई पड़तीं कि फ़लाना की लड़की को फलाने लड़के ने कोठे पर ही बेचा होगा। पुलिस बंबई तक जाती थी, खोज में। एकाध बरामदगी भी हुई। उन्हीं दिनों ख़्याल आता कि कोई मुझे भी भगा ले जाए, हीरोइन बना दे। न कोई प्रेमी था न गहनों या पैसों की कोई पोटली जिसे समेट कर बंबई भागा जा सकता था। बस इच्छाएँ थीं... ! बस किसी तरह बंबई देखना है... मगर कैसे? न परिवार में कोई बंबई गया न कोई आया। फ़िल्मों का बंबई बहुत लुभाता। उसकी बसें, लोकल ट्रेन, ट्रैफ़िक सिग्नल, धारावी की झोपड़ियाँ, लोगों के बोलने का अंदाज... आज़ाद घूमती लड़कियाँ। बंबई की बारिशें , समंदर की लहरें... जाने कितने दृश्य खींचते। मन करता, जुहु तट पर खड़े होकर नारियल पानी पीऊं या गेटवे ऑफ इंडिया पर खड़ी हो जाऊँ... गाने गाऊँ...

ये सब असंभव स्वप्न थे और अतृप्त इच्छाएं थीं। घर का माहौल देख कर लगता नहीं था कि कभी अपने प्रिय शहर को देख पाऊँगी। जिसकी विराट छवि सिनेमा ने गढ़ी है मेरे मन में। भाग जाने का कोई अवसर नहीं मिला। कई तरह के

भय थे। मेरे सामने कई युगल पकड़ कर थाने लाए गए। सब बंबई की ट्रेन से उतारे गए थे या स्टेशन से पकड़े गए थे। कुछ वहाँ से लाए गए थे। हमें ये सब घर में बताया जाता और दिखाया भी जाता कि देखो इस लड़की ने घर से भाग कर जीवन ख़राब कर लिया। लड़के ने बर्बाद कर दिया। कौन करेगा इससे शादी? इसी तरह की बातें...! ये सब देख -सुन कर ऐसा भय बैठ गया था कि भागने के बारे में सोचना बंद। बंबई को सपने में बसा लिया। हर रात उसे देखा करते। दिन कटने लगे। वे स्कूल के आख़िरी साल थे।

एक दिन खबर आई कि चचेरी बहन रेणु दीदी की शादी बंबई में नौकरी कर रहे लड़के से तय हो गई है। लड़का टेक्स्टटाइल इंजीनियर है। बंबई में ही उसने "छत "ख़रीदा है, उस पर मकान बनवाएगा। इसके पहले हमने सुना था कि ज़मीन ख़रीद कर मकान बनाए जाते हैं। छत ख़रीद कर मकान बनाने की बात अनोखी थी। इस बात का उल्लास घर में था कि लड़के का मकान भी है... मेरे भीतर जो उल्लास था वो बंबई को लेकर था। हमारे और भी जीजा जी थे, हम इतने खुश कभी न हुए जितने बंबई वाले जीजा जी को लेकर हुए। मैंने और रेणु दी की छोटी बहन माला दी ने तय किया कि अन्य जीजाओं की तरह उन्हें मेहमान नहीं कहेंगे। बंबई का रहने वाला है, हम जीजा जी कहेंगे। हमारे परिवार में बहनोई को जीजा जी कहने का रिवाज इन्हीं बंबई वाले लड़के की वजह से शुरु हुआ । क्योंकि हम उन्हें बहुत ऊँचे पायदान पर रख कर देखने लगे थे जबकि मेरे अन्य बहनोई सब ऊँचे पदों पर काम